दोहा (73)

पत्रा हीं तिथि पाइये, या घर के चहुँ पास।

नित प्रति पून्यों ही रहै, आनन-ओप-उजास॥ ७३॥

प्रसंग

यह श्रृंगार-रस का दोहा है। इसमें नायिका के मुख की सुंदरता का वर्णन किया गया है। कवि नायिका के मुख की तुलना चन्द्रमा से करते हुए उसकी शोभा का बखान करते हैं।

शब्दार्थ

- पत्रा - पंचांग (तिथि जानने की पुस्तक)
- तिथि पाइये - तिथि ज्ञात होती है
- चहुँ पास - चारों ओर
- नित प्रति - प्रतिदिन
- पून्यों - पूर्णिमा
- आनन - मुख
- ओप-उजास - आभा और प्रकाश

व्याख्या

कवि कहते हैं कि तिथि जानने के दो साधन होते हैं–एक पंचांग (पत्रा) और दूसरा चन्द्रमा का उदय होना। परंतु इस (नायिका) के घर के चारों ओर तो नित्य ही पूर्णिमा रहती है, क्योंकि उसके मुख की आभा और प्रकाश सदा पूर्ण चन्द्रमा के समान दमकते रहते हैं।

अर्थात् नायिका का मुख इतना उज्ज्वल और सुंदर है कि उसके घर में प्रतिदिन पूर्णिमा जैसा प्रकाश रहता है। वहाँ चन्द्रमा देखने या पंचांग देखने की आवश्यकता ही नहीं, क्योंकि उसके मुख की ज्योति ही पूर्णिमा का आभास कराती है।

कवि कहते हैं कि सामान्यतः तिथि जानने के दो साधन होते हैं–एक पंचांग (पत्रा) और दूसरा आकाश में चन्द्रमा को देखकर। पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा की पूर्ण कांति चारों ओर प्रकाश फैलाती है।

परंतु इस नायिका के घर के चारों ओर तो प्रतिदिन ही पूर्णिमा रहती है। इसका कारण यह है कि उसके मुख की आभा इतनी उज्ज्वल और प्रकाशमान है कि वहाँ सदा पूर्णिमा जैसा उजास बना रहता है।

कवि का आशय है कि नायिका का मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान गोल, उज्ज्वल और शीतल है। उसकी सुंदरता के कारण उसके घर का वातावरण सदैव प्रकाशमय बना रहता है। वहाँ चन्द्रमा की प्रतीक्षा करने या पंचांग देखने की आवश्यकता ही नहीं, क्योंकि उसके मुख की कांति ही पूर्णिमा का आभास करा देती है।

यहाँ कवि ने नायिका की सुंदरता को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया है, जिससे उसकी शोभा अलौकिक प्रतीत होती है।

भावार्थ

नायिका के मुख की कांति पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान है। उसके घर के आसपास सदा पूर्णिमा-सा प्रकाश छाया रहता है।

काव्य-सौंदर्य

- रूपक अलंकार - नायिका के मुख को पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान बताना।
- अतिशयोक्ति अलंकार - प्रतिदिन पूर्णिमा होना।
- श्रृंगार-रस की अभिव्यक्ति।
- सरल, सरस ब्रजभाषा का प्रयोग।

दोहा (88)

देखत तुरे कपूर ज्यों, उड़े जाय जिमि, लाल।

छिन-छिन जाती परी खरी, छीनि बुढ़ीति बाल॥ ८८॥

(पाठ में कुछ स्थानों पर भिन्न पाठ भी मिलते हैं, पर भाव यही है।)

प्रसंग

यहाँ कवि नायिका की कोमलता और लज्जा का चित्रण करते हैं। नायक कहता है कि नायिका इतनी संकोची और नाज़ुक है कि उसे देखते ही वह कपूर की तरह उड़ जाने वाली प्रतीत होती है।

शब्दार्थ

- कपूर - एक सुगंधित पदार्थ जो जल्दी उड़ जाता है
- उड़े जाय जिमि - जैसे उड़ जाता है
- छिन-छिन - क्षण-क्षण
- परी - परी (अत्यंत कोमल स्त्री)
- बुढ़ीति - बढ़ती हुई
- बाल - (यहाँ) लज्जा/कोमलता का बोध

व्याख्या

कवि कहते हैं–हे लाल! (प्रियतम) उसे देखते ही ऐसा लगता है जैसे कपूर उड़ जाता है। वह इतनी कोमल और लज्जाशील है कि क्षण-क्षण उसकी अवस्था बदलती प्रतीत होती है। उसकी

कोमलता और संकोच बढ़ते ही जा रहे हैं, मानो वह सचमुच कोई परी हो जो दृष्टि पड़ते ही उड़ जाएगी।

अर्थात् नायिका इतनी नाज़ुक और लाज से भरी है कि उसे देखते ही वह सकुचा जाती है। उसकी कोमलता कपूर की भाँति क्षणभंगुर और उड़ जाने वाली प्रतीत होती है।

कवि कहते हैं कि हे प्रिय! उसे देखते ही ऐसा प्रतीत होता है जैसे कपूर तुरंत उड़ जाता है। कपूर अत्यंत हल्का और क्षणभंगुर होता है—जरा-सी गर्मी या स्पर्श से वह उड़ जाता है। उसी प्रकार नायिका इतनी कोमल, लज्जाशील और संकोची है कि किसी की दृष्टि पड़ते ही वह सकुचा जाती है और मानो विलीन हो जाएगी।

कवि आगे कहते हैं कि वह क्षण-क्षण बदलती हुई प्रतीत होती है। उसकी लज्जा और कोमलता निरंतर बढ़ती जाती है। वह सचमुच किसी परी के समान अलौकिक और नाजुक लगती है।

यहाँ नायिका की केवल शारीरिक सुंदरता ही नहीं, बल्कि उसकी भीतरी लज्जाशीलता और संकोच का भी चित्रण है। उसकी मासूमियत और कोमल भावनाएँ इतनी प्रबल हैं कि वह दृष्टि-स्पर्श से भी व्याकुल हो उठती है।

बिहारी ने अत्यंत संक्षिप्त शब्दों में नायिका की नाजुकता, उसकी भावुकता और उसके सौंदर्य का जीवंत चित्र खींच दिया है। कपूर की उपमा देकर कवि ने उसकी कोमलता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है।

भावार्थ

नायिका की कोमलता और लज्जा का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि वह इतनी नाजुक है कि उसे देखते ही कपूर की तरह उड़ जाने वाली जान पड़ती है।

काव्य-सौंदर्य

- उपमा अलंकार - नायिका की तुलना कपूर से।
- अतिशयोक्ति - देखते ही उड़ जाना।
- कोमल श्रृंगार-रस की अभिव्यक्ति।
- ब्रजभाषा की मधुरता।

दोहा (94)

तंत्री-नाद, कवित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।

अनबूझे बूझे, तरे जे बूझे सब अंग॥ ९४॥

प्रसंग

यहाँ कवि कला और रस की समझ के विषय में कहते हैं। वे संकेत करते हैं कि संगीत, काव्य और प्रेम-रस का वास्तविक आनंद वही ले सकता है, जिसे इन सबका सच्चा ज्ञान हो।

शब्दार्थ

- तंत्री-नाद - वीणा आदि वाद्य का मधुर स्वर
- कवित्त-रस - कविता का रस/सौंदर्य
- सरस राग - मधुर संगीत
- रति-रंग - प्रेम की लीलाएँ
- अनबूझे - जो न समझे
- बूझे - जो समझे
- सब अंग - सभी पक्ष, सम्पूर्ण भाव

व्याख्या

कवि कहते हैं कि वीणा का मधुर नाद, कविता का रस, सुरीला राग और प्रेम की रंग-लीलाएँ–इन सबका सही आनंद वही व्यक्ति ले सकता है जो इनके सभी अंगों को समझता हो।

जो व्यक्ति इन कलाओं और भावों से अनभिज्ञ है, वह इनके वास्तविक सुख से वंचित रह जाता है। केवल जानकार और सहृदय व्यक्ति ही इनके गूढ़ आनंद को प्राप्त करता है।

कवि कहते हैं कि वीणा का मधुर नाद, कविता का रस, सुरीला राग और प्रेम-लीलाएँ–इन सबका वास्तविक आनंद वही उठा सकता है जो इनके सभी अंगों को भली-भाँति समझता हो।

यदि कोई व्यक्ति संगीत सुनता है, पर उसे स्वर, लय और ताल का ज्ञान नहीं; कविता पढ़ता है, पर अलंकार, भाव और रस की पहचान नहीं; या प्रेम के सूक्ष्म संकेतों को नहीं समझता–तो वह इनका बाहरी रूप तो देख सकता है, पर उनके गूढ़ आनंद से वंचित रह जाता है।

बिहारी का आशय है कि कला का आस्वादन करने के लिए सहृदयता और मर्मज्ञान आवश्यक है। जो व्यक्ति 'अनबूझ' है, वह रस का अनुभव नहीं कर सकता। परंतु जो 'बूझे' (समझदार) हैं, वे ही इन कलाओं के माध्यम से जीवन-सागर को पार कर जाते हैं अर्थात् सच्चा आनंद प्राप्त करते हैं।

भावार्थ

संगीत, काव्य और प्रेम-रस का सच्चा आनंद वही उठा सकता है, जो उनके सभी पक्षों और गूढ़ भावों को समझता हो। अज्ञानी व्यक्ति इनके वास्तविक रस से वंचित रहता है।

काव्य-सौंदर्य

- चारों विषयों (संगीत, काव्य, राग, रति) का सुंदर समुच्चय।
- अनुप्रास अलंकार - 'र' ध्वनि की पुनरावृत्ति (रस, राग, रति-रंग)।
- नीति और श्रृंगार का समन्वय।
- संक्षेप में गूढ़ भाव व्यक्त करने की बिहारी की विशेषता।